स्वदेशी जागरण मंच के अखिल भारतीय संयोजक श्री आर.सुंदरम के द्वारा पूना राष्ट्रीय परिषद बैठक (3,4 जून 2023) में दिया गया उद्बोधन

हिंदवी स्वराज्य के संस्थापक छत्रपति शिवाजी महाराज के मराठा साम्राज्य द्वारा माँ पार्वती सहित 250 से

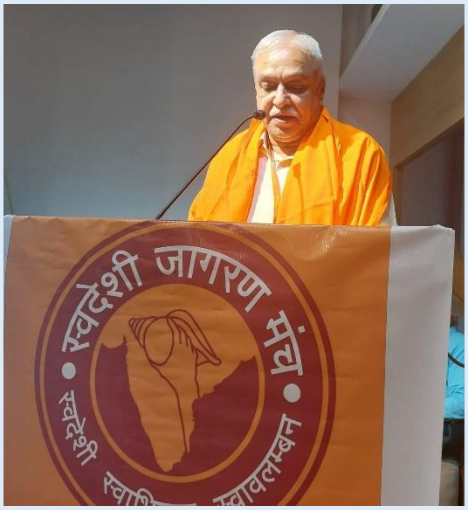

अधिक प्राचीन मंदिरों की नगरी पूना में आज हम सब एकत्रित आए हैं। अठारहवीं शताब्दी में जब भारत की विश्व जीडीपी में हिस्सेदारी 16% से अधिक की तब केवल पूना से ही 143 परिवार ऐसे थे जिन्हें आर्थिक, सैन्य एवं राजनैतिक गतिविधियों में ख्याति अर्जित थी। सोसाईटी ड्रिवन रहे हमारे देश में आज भी हज़ारों ऐसे परिवार व व्यापारिक समुदाय एवं वर्ग हैं जो शताब्दियों से उद्यमिता में हैं। समाज सुधार के कार्य, सांस्कृतिक गतिविधियाँ या फिर प्रखर राष्ट्रवाद इन सभी के केंद्र के रूप में पूना रहा है। संत तुकाराम, महात्मा ज्योतिराव फुले, सावित्री बाई फुले, गोपाल गणेश आगरकर, ताराबाई शिंदे, धोंडो केशव कर्वे को सदैव याद किया जाता है। मुग़ल हों या अंग्रेज पूना की यह भूमि उनसे संघर्ष का केंद्र रही है। स्वातंत्र्य वीर सावरकर नें यहाँ विदेशी कपड़ों की होली जलाई। स्वदेशी के प्रखर प्रवक्ता बाल गंगाधर तिलक, गोपाल कृष्ण गोखले सहित अनेक स्वतंत्रता सेनानियों का अतुल्य योगदान कौन भूल सकता है।

आज पूना देश के सबसे बड़े आई टी हब्स में से एक है। उच्च शिक्षा के अनेक प्रख्यात संस्थानों के कारण इसे ऑक्सफोर्ड ऑफ़ ईस्ट कहा जाता है। दक्षिण एशिया के सबसे तेज़ विकसित होने वाले केंद्रों में पूना भी है।

पूना से मेरा व्यक्तिगत भावनात्मक जुड़ाव है। श्रद्धेय दत्तोपंत ठेंगड़ी जी, श्रद्धेय के.सी.सुदर्शन जी व श्रद्धेय मदन दास देवी जी की उपस्थिति में दिनांक 1 मई 1994 को श्री पी. मुरलीधर राव ने तमिलनाडु प्रांत के संयोजक का दायित्व मुझे पूना में ही प्रदान किया था। कोरोना में जब पूरा विश्व संकट में फँस गया था तब पूना की सीरम इंस्टीट्यूट नें भारत को स्वदेशी वैक्सीन देकर देश और दुनिया भर में जनता को जीवनदान दिया। ऐसी पुण्यभूमि को मैं नमन करता हूँ।

बंधुओं, सदियों में कोरोना जैसी वैश्विक आपदा आयी थी। भारत सहित समस्त विश्व में लगभग सभी गतिविधियां एकाएक ठप हो गई थी। कुछ समय के लिए तो स्वदेशी जागरण मंच भी इससे अछूता नहीं रहा था। लेकिन बहुत जल्दी हम सबने मिलकर अपने आप को तेज़ी से संभाला और अपनी गतिविधियों को न केवल पुनः प्रारम्भ किया बल्कि उनमें ऐतिहासिक तेज़ी के साथ व्यापक विस्तार भी किया। इस दौरान अनेक क्रांतिकारी परिवर्तन हमने अपनी कार्यशैली में किए और नई ऊँचाइयों को छूआ। इनमें से कुछ का उल्लेख मैं यहाँ करना चाहूँगा :-

1. 25 मई 2020 को प्रारंभ स्वदेशी स्वावलंबन अभियान के अंतर्गत देश के 714 ज़िलों में डिजिटल माध्यम से हम पहुँचे। इस अभियान में 13,35,363 नागरिकों को सहभागी बनाकर इसके समर्थन में उनके हस्ताक्षर प्राप्त किए। इसके अलावा 46,250 नागरिकों नें स्वयं को इस अभियान में स्वदेशी वॉलेंटियर्स के रूप में रजिस्टर किया। कई दिन चले इस अभियान को विचार परिवार एवं अन्य संगठनों ने मिलकर एक एक दिन अपने अपने संगठन की ओर से चलाया।
2. कोरोना की वैक्सीन सबको उपलब्ध हो इसके लिए “पेटेंट वेवर अभियान” दुनिया भर में चलाया गया। भारत में इस अभियान के समर्थन में 14,68,350 नागरिकों नें विश्व स्वास्थ्य संगठन को संबोधित पिटीशन पर अपने हस्ताक्षर किए। बीस देशों में 15,226 नागरिकों एवं भारत के 2200 से भी अधिक अति गणमान्य एवं महत्वपूर्ण व्यक्तियों नें भी हस्ताक्षर किए। इस विषय पर विश्व स्वास्थ्य संगठन की बैठक वाले दिन बीस देशों में सैकड़ों स्थानों पर एवं देश में हज़ारों स्थानों पर पेटेंट वेवर के समर्थन में नारे लिखकर प्रदर्शन कार्यक्रम किए गए।
3. कोरोना काल में जिन उद्यमियों नें अपने कर्मचारियों की देखभाल और संभाल करी, उनकी छँटनी नहीं करी, देश भर में ऐसे 2755 उद्यमियों को अलग अलग स्थानों पर सम्मानित करने के कार्यक्रम आयोजित किये गये।
4. 100 से अधिक विश्वविद्यालयों और उच्च शिक्षण संस्थानों में उद्यमिता प्रोत्साहन कार्यक्रम और गोष्ठियाँ आयोजित करी गयीं।
5. कोरोना के कारण मात्र दस पंद्रह दिन में दुनिया के जीडीपी में भारी गिरावट आ गई थी। पूरे विश्व में श्रमिकों का पलायन हुआ। यहां तक कि विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था अमेरिका में 100 शहरों में दंगे हुए और 25 शहरों में कर्फ्यू भी लगाना पड़ा। इस कारण वैश्विकरण आधारित वर्तमान केन्द्रीकृत अर्थव्यवस्था का खोखलापन दुनिया के सामने उजागर हुआ। नई वैकल्पिक अर्थव्यवस्था एवं विश्व व्यवस्था के लिए देश भर के बुद्धिजीवियों, नीति निर्माताओं, अर्थशास्त्रियों, उद्योग जगत, सामाजिक कार्यकर्ताओं एवं राजनेताओं के साथ “सस्टेनेबल डेवलपमेंट विद इंक्लूसिव ग्रोथ फॉर ऑप्टिमाइज़िंग एम्प्लॉयमेंट एंड एलिमिनेटिंग पावर्टी” (Sustainable Development with Inclusive Growth for Optimising Employment and Eliminating Poverty) विषय पर तीन दिवसीय “अर्थचिंतन” कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें तीस विभिन्न प्रमुख वक्ताओं ने भाग लिया। देश भर में डिजिटल माध्यम से सैकड़ों स्थानों पर हज़ारों बुद्धिजीवियों और कार्यकर्ताओं नें इसमें सहभागिता करी। देश के 800 विश्वविद्यालयों का संगठन इस कार्यक्रम का सह आयोजक बना। वक्ताओं के कथन का सार प्रकाशित करके वितरित किया गया।
6. स्वदेशी शोध संस्थान के नई दिल्ली में भवन निर्माण लिए व्यापक अभियान के द्वारा अर्थ संग्रह किया गया।

7. भारत में जब हर क्षेत्र में जीडीपी गिर गई थी तब केवल कृषि क्षेत्र नें ही ग्रोथ दर्ज करी थी। कृषि भूमि की मिट्टी के गिरते हुए स्वास्थ्य, बंजर होती भूमि एवं जैविक खेती के विषय में 52 दिन तक चले "भूमि सुपोषण अभियान" के अंतर्गत व्यापक शोध करके उसका साहित्य निर्माण किया, वितरित किया और प्रचारित किया गया। नव वर्ष प्रतिपदा (भूमि उद्भव दिवस) 13 अप्रैल 2021 को सभी प्रांतों में स्वदेशी जागरण मंच के द्वारा स्थानीय नागरिकों को सम्मिलित करते हुए 1800 से अधिक स्थानों पर भूमि पूजन करके व्यापक जन जागरण किया गया। इस अवसर पर हैशटैग अभियान के फलस्वरूप ट्विटर ट्रेंडिंग भी हुई।
8. स्वदेशी जागरण मंच की कार्यप्रणाली को युगानुकूल टेक्नोलॉजी के अनुसार परिवर्तन किया गया। आज हमारा अर्थ संग्रह पेपरलेस और कैशलेस किया जा चुका है।

इसके अलावा स्वावलंबी भारत अभियान के अंतर्गत अनेक कार्यक्रम भी हुए हैं और चल रहे हैं। इन सभी अभियानों के फलस्वरूप आज हम जहाँ खड़े हैं तो हम विनम्रता पूर्वक गर्व से कह सकते हैं कि :-

1. हमार भौगोलिक विस्तार हुआ है।
2. हमारा संगठनात्मक विस्तार हुआ है। चालीस प्रांतों के 620 ज़िलों में हमारी इकाइयां काम कर रही हैं।
3. विचार परिवार में हमारी प्रासंगिकता एवं स्वीकार्यता बढ़ी है। दशकों के बाद विचार परिवार में आर्थिक प्रस्ताव पारित हुआ और उसके क्रियान्वयन की वृहद योजना बनी। विभिन्न संगठनों नें इस योजना के समन्वय का दायित्व स्वदेशी जागरण मंच को प्रदान किया। विभिन्न अवसरों पर परमपूज्य सरसंघचालक जी, माननीय सरकार्यवाह जी व माननीय पूर्व सरकार्यवाह जी नें सार्वजनिक रूप से हमारे कार्यों की सराहना करी और हमारे कार्यक्रमों में सहभागिता करी।
4. नई दिल्ली में स्वदेशी शोध संस्थान के भवन का निर्माण कार्य हो या उसके 13 वर्टिकल्स के नीति शोध कार्य हों दोनों में तेज़ी से प्रगति हो रही है। अनेक प्रकार का साहित्य निर्माण भी इस कार्यकाल में हुआ है।
5. 9 सत्र, 68 विद्वान वक्ता, 7 वाइस चांसलर महोदय, 2 केंद्रीय मंत्री, 2 माननीय सह सरकार्यवाह, 1 माननीय पूर्व सह सरकार्यवाह, 14 संगठनों के संगठन मंत्री, प्रख्यात गीतकार श्री कैलाश खेर, 15 प्रांतों के 1350 प्रतिनिधियों की सहभागिता से नई दिल्ली में सम्पन्न तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला स्वावलंबी भारत अभियान में मील का पत्थर है।
6. MySBA वेब पोर्टल, MySBA एप, फ़ेसबुक, ट्विटर सहित अनेक माध्यमों से हमारी सोशल मीडिया में व डिजिटल पहुँच बढ़ी है।

7. 452 ज़िलों में रोज़गार सृजन केंद्र खुल चुके हैं और उन्हें व्यवस्थित करने का काम प्रगति पर है। शेष ज़िलों में भी केंद्र खोले जा रहे हैं।

इन सब के कारण आज देश हमारी ओर आशा के साथ देख रहा है। इसको यूँ भी कह सकते हैं कि देश हमारी और आशा के साथ देख रहा है इस कारण हम आज इस स्थिति तक पहुँच पाए हैं।

मंच का गठन हुए 30 वर्ष पूर्ण हो गए हैं। इन 30 वर्षों भारत सहित दुनिया भर में अनेक आर्थिक, राजनैतिक, कूटनीतिक, टेक्नोलॉजिकल परिवर्तन हुए हैं। आने वाला समय और अधिक तीव्र गति से आने वाले परिवर्तनों का है। स्वाभाविक रूप से परिवर्तन चुनौती भी लाते हैं और इनके बीच आपार अवसर भी छुपे हुए होते हैं।

हमें न केवल इन अवसरों को भाँपना है बल्कि इनका लाभ भी उठाना है। हमें गहरा आत्मावलोकन करना है। बदलती परिस्थितियों के अनुसार अपनी प्राथमिकताओं को पुनर्निधारित करना है। देश को हमसे क्या आशा है ? देश के सामने क्या चुनौतियां और अवसर हैं? इन सबके आलोक में हम आज वर्तमान में काम करेंगे। यही हमारा भविष्य का मार्ग रहेगा।

बीसवीं शताब्दी में दुनिया ने स्पैनिश फ्लू, दो दो विश्व युद्ध, युद्ध उपरांत भारी मंदी, मशीनीकरण, साम्यवाद का ढहना, शीत युद्ध, अन्य क्षेत्रीय संघर्ष, ईस्ट एशियन संकट, वैश्विकरण जैसी अनेक स्थितियों का सामना किया। भारत के संदर्भ में विभाजन, रजवाड़ों का एकीकरण, खाद्य संकट, चीन से युद्ध, पाकिस्तान से युद्ध, भुगतान संतुलन संकट, अस्थिर सरकारें, ग़रीबी, सामाजिक असंतोष आदि को देखते हुए ये चुनौतियाँ कहीं अधिक बड़ी थीं।

इस शताब्दी का प्रारंभ प्रौद्योगिकी क्रांति से हुआ। 2008 की वैश्विक मंदी पहले ही दशक में आ गई थी जिसके फलस्वरूप अर्थव्यवस्था और रोज़गार गंभीर रूप से प्रभावित हुए। दूसरे दशक में व्यापार युद्ध, टेपर टेंट्रम की घटनाएँ, सुपर पावर्स में व्यापारिक तनाव, यूरोप में आर्थिक उथल पुथल और उसके फलस्वरूप ब्रिटेन का यूरोपियन यूनियन से अलग होना, चीन से प्रोडक्शन लाईन का पलायन, कोरोना के कारण उत्पादन एवं सप्लाई चेन का ठप होना, डिजिटल क्रांति सहित ऐसी अनेक स्थितियों का सामना किया है।

तीसरे दशक की पहली चुनौती जनवरी 2020 में विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा अधिसूचित कोविड -19 महामारी के रूप में सामने आई, जिसने वैश्विक विकास को प्रभावित किया। दो वर्ष बाद, जब वैश्विक अर्थव्यवस्था महामारी के कारण उत्पन्न उत्पादन संकुचन से उबर रही थी, फरवरी 2022 में रूस-यूक्रेन संघर्ष छिड़ गया, जिससे कमोडिटी की कीमतों में उछाल आया और इस प्रकार, मौजूदा मुद्रास्फीति के दबाव में तेजी आई। इसने दूसरी चुनौती पेश करी। इसके तुरंत बाद, तीसरी चुनौती तब सामने आई जब दुनिया के देशों ने मुद्रास्फीति (महंगाई) पर लगाम लगाने के लिए मौद्रिक नीति में सख्ती प्रारंभ करी, जिससे आर्थिक वृद्धि

दर (विकास) कमजोर हुई। मौद्रिक तंगी ने भी अमेरिकी बाजारों की तरफ पूंजी प्रवाह को (टैक्स हेवन की ओर) धकेल दिया, बढ़ते सॉवरेन बॉन्ड प्रतिफल में योगदान दिया और अमेरिकी डॉलर के मुकाबले अधिकांश करेंसियाँ कमज़ोर हुईं। उधार लेने की लागत में वृद्धि से सार्वजनिक और निजी ऋण उच्च स्तर पर बढे, जिससे समूची वित्तीय प्रणाली को खतरा पैदा हो गया। वैश्विक मुद्रास्फीति जनित मंदी (stagflation) की संभावनाओं का सामना करते हुए, देश अपने अपने आर्थिक स्थान (economic space) को बचाए रखने के लिए मजबूर हुए, जिस कारण सीमा पार व्यापार धीमा हो गया, इस कारण विकास के सामने यह चौथी चुनौती आई। पांचवीं चुनौती और भी अधिक भयानक थी, क्योंकि चीन ने अपनी नीतियों के फलस्वरूप काफ़ी मंदी का अनुभव किया। महामारी के कारण शिक्षा और आय अर्जित करने के अवसरों में आई कमी नें विकास के लिए छठी मध्यम अवधि की चुनौती पेश करी। दुनिया के सामने ऐसी कई चुनौतियों का एक साथ होना शायद अभूतपूर्व है।

दुनिया के अनेक देशों की तुलना में भारत नें इन असाधारण चुनौतियों का कहीं अधिक बेहतर तरीक़े से सामना किया है।इन चुनौतियों से जहाँ अनेक देश अभी तक उबर भी नहीं पाए हैं या फिर जो उबरे भी हैं तो केवल पूर्ववत् स्थिति में ही पहुँच पाए हैं वहीं भारत एंटी फ्रेजाइल होकर और अधिक ऊर्जावान, मज़बूती और प्रगति के साथ निखर कर निकला है।

स्वदेशी की दिशा में आत्मनिर्भर भारत एक क्रांतिकारी क़दम सिद्ध हुआ। रक्षा उत्पादन का स्वदेशीकरण, ओ.एन.डी.सी., यूपीआई पेमेंट सिस्टम, 5 जी टेक्नोलॉजी, स्वदेशी वैक्सीन, 250 करोड़ टीकाकरण, 10 लाख स्टार्ट अप, जनधन खाते, आधार से 99 प्रतिशत जनसंख्या को डिजिटल आइडेंटिटी, स्वदेशी पर्यटन को बढ़ावा, स्वदेशी खिलौना उद्योग में वृद्धि, नेनो फर्टिलाइजर, स्वदेशी पर्यटन और ग्रामोद्योग को बढ़ावा, वोकल फॉर लोकल का बार बार आहवान जैसे अनेक उदाहरण हमारे पास हैं।

संयुक्त राष्ट्र द्वारा जारी नई जनसंख्या रिपोर्ट अनुसार भारत विश्व की सर्वाधिक जनसंख्या (142.85 करोड़) वाला देश बन गया है। इसमें से 25 प्रतिशत जनसंख्या 25 वर्ष से कम आयु वर्ग की है। 25 से 60 वर्ष की कार्यशील जनसंख्या लगभग 100 करोड़ है। शेष जनसंख्या वृद्ध है। भारत की जनसंख्या रिपोर्ट को लेकर पश्चिमी मीडिया यह आशंकाएं जता रहा है कि भारत इतनी बड़ी जनसंख्या का योग क्षेम कैसे रख पाएगा। ऐसी ही आशंका स्वतंत्रता से पूर्व चर्चिल नें जतायी थी और 1960 के दशक में भी जतायी गई थीं। लेकिन वे आशंकायें निर्मूल सिद्ध हुई। भारत स्थिर सरकार वाला एक लोकतांत्रिक देश है और यहाँ अन्न के प्रचुर भंडार हैं। इसी प्रकार जनसंख्या को लेकर पश्चिमी मीडिया की इन आशंकाओं कि अधिक जनसंख्या बोझ होती है और इससे विकास रुकता है, इसको भारत एक बार फिर निर्मूल सिद्ध करेगा।

अधिक जनसंख्या और उसमें से भी अधिकांश युवा जनसंख्या एक शक्ति है, एक अवसर है। दुनिया का सबसे युवा देश होने का गौरव हमारे पास है। युवा ऊर्जावान, मेधावी और कार्य करने के इच्छुक तो होते ही

हैं साथ ही अपनी ज़रूरतों और शौक़ पूर्ति कारण एक बड़ा बाज़ार भी उपलब्ध करवाते हैं। इसके अलावा वे भविष्य के लिए बचत भी करते हैं। इस बचत से देश में पूंजी निर्माण होता है। यह पूंजी निर्माण घरेलू निवेश की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। किन्तु दुनिया का सबसे बड़ा युवा देश होने का यह डेमोग्राफिक डिविडेंड हमारे पास हमेशा नहीं रहने वाला। यह स्वर्णिम अवसर हमारे पास केवल वर्ष 2045 तक ही रहने वाला है। हाँ, यदि अमृतकाल के इन बाईस वर्षों में हमने इस अवसर का लाभ उठा लिया तो दीर्घकालिक समृद्धि को प्राप्त करने का विशाल तंत्र भारत के गाँवों, क़स्बों, छोटे शहरों में खड़ा किया जा सकता है।

वैश्वीकरण से दुनिया का मोह भंग हो रहा है। विशेषकर हिंसक वैश्विकरण (Violent Globalisation) से दुनिया ऊब गई है। साम्यवाद और पूंजीवाद दोनों के दिन लद गए हैं। दुनिया के देश इन्हें इतिहास के कूड़ेदान में फेंक रहे हैं। रीग्लोबलाइजेशन, डीग्लोबलाइजेशन, डिसेंट्रलाइज्ड ग्लोबलाइज़ेशन, रिस्ट्रिक्टेड ग्लोबलाइजेशन, डी-ग्रोथ, डी-पापुलेशन, डीडॉलराइज़ेशन, डीकपलिंग विद चाईना आदि की तरफ़ विश्व बढ़ रहा है। चीन दुनिया को कर्ज़ देने वाला सबसे बड़ा क़र्ज़दाता देश बन गया है। दुनिया चीन के क़र्ज़दारी के जाल को समझ रही है और धीरे धीरे चीनी कर्ज़ से विमुख हो रही है।

इन सब स्थितियों में आगे का रास्ता क्या हो ? यह रास्ता वही है जिसकी चर्चा हम पिछले तीस वर्षों से कर रहे हैं। वह रास्ता भारत की सनातन दृष्टि पर आधारित वसुधैव कुटुम्बकम और सर्वे भवन्तु सुखिनः का है। इस पर आधारित अनादि से अनंत के विकास का है। सस्टेनेबल डेवलपमेंट, इंक्लूसिव डेवलपमेंट और शेयर्ड प्रोस्पेरिटी का है। जिसकी युगानुकूल व्याख्या पंडित दीन दयाल उपाध्याय जी नें एकात्म मानव दर्शन में करी और उनके बाद दत्तोपंत ठेंगड़ी जी नें थर्ड वे में करी।

विश्व व्यापार संगठन के अनुसार वर्ष 2023 में विश्व अर्थव्यवस्था में वृद्धि दर केवल एक प्रतिशत ही रहेगी। अर्थात विश्व में माल की माँग घट रही है। वहीं दूसरी तरफ़ भारत में माल की भारी माँग है। किन्तु इस माँग की पूर्ति के लिए हमारे पास पर्याप्त उत्पादन नहीं है। जिसके फलस्वरूप हमें भारी मात्रा में माल को बाहर से मंगाना पड़ता है। अर्थात दुनिया जहाँ Demand Constraint है तो वहीं दूसरी और भारत Supply Constraint है। भारत की माँग की पूर्ति करने का उत्पादन तंत्र खड़ा करके इस स्थिति को बदला जा सकता है।

भारत में श्रम का पलायन वहाँ होता है जहाँ पूंजी है इस कारण जहाँ एक और हमारे गाँव युवाओं से ख़ाली हो रहे हैं, वहीं दूसरी ओर वे युवा शहरों में नारकीय स्थितियों में जीवन जीने को मजबूर है। पूंजी वहाँ पहुँचे जहाँ श्रम और भूमि की उपलब्धता है, ऐसा करके इस स्थिति को बदला जा सकता है।

टेक्नोलॉजी नें अनेक आर्थिक गतिविधियों का विकेंद्रीकरण किया है। इसके अलावा आई.आई.टी., आई.आई.एम. व उच्च शिक्षण संस्थानों से निकले हज़ारों युवा एवं अन्य युवा भारी संख्या में अपनी प्रेरणा से अपने अपने स्थानों पर सफल प्रयोग कर रहे हैं। इसके फलस्वरूप अनेक स्थानों पर क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं। तमिलनाडू के छोटे से गाँव से संचालित आई टी कंपनी जोहो कोरपोरेशन इसका उदाहरण है। हमें इनसे समन्वय, संवाद,

सहकार करके लाभ उठाना है। भारत का आई. टी. सेक्टर 225 अरब डॉलर का है। प्रतिभावान युवाओं के द्वारा हम इसे 1,000 अरब डॉलर (एक ट्रिलियन डॉलर) तक सरलता से पहुँचा सकते हैं। यह कार्य छोटे शहरों, कस्बों एवं गांवों से भी किया जा सकता है। इसके अलावा जैविक कृषि, खाद्य प्रसंस्करण इकाईयां, डेरी उद्योग, पोल्ट्री उद्योग, ग्रामोद्योग सहित अन्य अनेक क्षेत्र हैं जहाँ हम लंबी छलांग लगा सकते हैं।

भारत के बारे में में यह धारणा सही नहीं है कि यहाँ निवेश के लिए अपनी घरेलू पूंजी नहीं है। जिसके कारण हमें विदेशी पूंजी पर आश्रित रहना पड़ता है। वास्तविकता यह है कि भारत की अपनी वार्षिक घरेलू बचत 475 अरब डॉलर की है। इसमें भी भारतीयों के द्वारा निवेश के रूप में ख़रीदे गए सोने की राशि को भी जोड़ दें तो यह राशि 950 अरब डॉलर वार्षिक तक पहुँच जाती है। हज़ारों टन स्वर्ण भंडार देश और समाज के पास है। इसके अलावा भारतीय अन्य तरीक़ों से भी भारी निवेश करते हैं।

देश में हज़ारों सामाजिक, धार्मिक, सेवा कार्य संगठन कार्य कर रहे हैं। अनेक अर्थशास्त्री समूह एवं सामाजिक चिंतक कार्य कर रहे हैं। वे हमारे विचार परिवार के वृहद विचार एवं विकास के दृष्टिकोण को जानने, समझने और सहयोग करने के इच्छुक हैं। हमें उन तक पहुँचना है। उनको एकसूत्र करना है। यहाँ मैं श्रद्धेय दत्तोपंत ठेंगडी जी को उद्धृत करना चाहूँगा। हमें “टेलेंट हंट” करना है, ऐसी कार्यप्रणाली अपनानी है कि हम सबके साथ मिलकर और सब हमारे साथ मिलकर कार्य कर सकें। साथ ही योगिराज श्रीकृष्ण जैसा लचीला रणनीतिक कौशल भी हमें दिखाना होगा।

हमारे सामने चुनौती आजीविका और रोज़गार की है। दुनिया में यह धारणा है की आर्थिक वृद्धि दर बढ़ेगी (Mass Production) तो रोज़गार बढ़ेगा। हमें इस धारणा को बदलना है। रोज़गार जनित आर्थिक वृद्धि (Production by Masses) के सिद्धांत को पुनर्स्थापित करना है। रोज़गार रहित आर्थिक विकास (Jobless Growth) को दुनिया अनुभव कर कर रही है।

भारत कभी भी मार्केट ड्रिवन या स्टेट ड्रिवन अर्थव्यवस्था नहीं रहा। यह सोसाइटी ड्रिवन अर्थव्यवस्था रहा है। जब भी अवसर या चुनौती आती है समाज एकजुट होकर खड़ा हो जाता है। भारत में आर्थिक प्रगति की आपार संभावनाएं हैं। हमारी मेधा और भौगोलिक संरचना इन संभावनाओं को और अधिक बढ़ाती है। वहीं दूसरी ओर चीन को छोड़कर अन्य देश गहरे आर्थिक दबाव में हैं। अमरीकी राष्ट्रपति का का ऑस्ट्रेलिया में आयोजित क्वाड की बैठक को रद्द करके वापस चले जाना इस दबाव की पुष्टि करता है।

भारत में 5 प्रतिशत जनसंख्या अति सम्पन्न है। इसके अलावा दुनिया भर में फैले 3 करोड़ से अधिक प्रवासी भारतीय है। इनके पास पर्याप्त पूंजी है। 65 प्रतिशत जनसंख्या ऐसी है जिसमें अधिकांश युवा और मध्यम

वर्ग है। शेष 25 प्रतिशत जनसंख्या सबसे पीछे खड़ी है। हमें ऐसा इकोसिस्टम बनाना है कि हमारे अति सम्पन्न आर्थिक रूप से राष्ट्रवादी होकर यहीं अपना निवेश करे। यहीं अपने उद्यम लगायें। उनकी पूंजी वहाँ जाए जहाँ भूमि और श्रम की उपलब्धता है। युवा और मध्यम वर्ग की 65 प्रतिशत जनसंख्या की कार्यक्षमता, कौशल और उत्पादकता को बढ़ाने की असीम संभावनाएं हैं। उनको काम देना है। इस सबके बल पर भारत का स्वावलंबन हमारी आवश्यकता है।

कम पूंजी, अधिक श्रम आधारित मैन्यूफ़ैक्चरिंग की हिस्सेदारी को जीडीपी के 30 प्रतिशत तक पहुँचाना है। नज़दीकी बाज़ारों का उपयोग करना है जिससे परिवहन लागत घटे और समय भी बचे। देश में रिसर्च एंड डेवलपमेंट पर व्यय को 0.6 प्रतिशत से बढ़ाकर जीडीपी के 5 प्रतिशत तक ले जाना है। देश की शीर्ष दस आई टी कंपनियाँ केवल एक प्रतिशत ही अपने रिसर्च एंड डेवलपमेंट में ख़र्च करती हैं, हमें इसको बढ़ाना है। एक जिला को एक क्रिटिकल टेक्नॉलजी का हब बनाना है। लोकल वस्तुओं का प्रयोग बढ़ाना है। आने वाले समय में छोटे शहरों की आय में देश के 8 प्रमुख महानगरों की तुलना में कहीं अधिक वृद्धि होगी। उनकी बढ़ती माँग की आपूर्ति के उद्योग वहीं लगें। इन सबके बल पर प्राप्त समृद्धि से सबसे पीछे खड़ी 25 प्रतिशत जनसंख्या के जीवन स्तर को ऊपर उठाना है।

भविष्य भारत का है। विकेंद्रीकरण हमारे फ़ोकस का मुख्य मंत्र रहेगा। स्वावलंबी भारत अभियान के लाखों कार्यकर्ता इसका तंत्र बनेंगे और देश भर में फैले हुए रोज़गार सृजन केंद्र इसका यंत्र बनेंगे।

हम ब्रह्माजी (सृजनकर्ता), भगवान विष्णु (संचालक) और महादेव (संहारक) से प्रेरणा लेते हुए आगे बढ़ेंगे। अर्थात महादेव से प्रेरणा लेते हुए जो पुराना और अप्रासंगिक हो गया है उसे बिना संकोच और हिचकिचाहट के त्याग देंगे। ब्रह्मा जी से प्रेरणा लेते हुए भविष्य के लिए सृजन करेंगे। और भगवान विष्णु से प्रेरणा लेते हुए भविष्य के लिए वर्तमान में कार्य करेंगे। पेराडाइम शिफ्ट के लिए युगानुकूल को धारण करेंगे।

इन्हीं सब बातों के आलोक में अगले दो दिन तक हम सब मिलकर विभिन्न विषयों पर सामूहिक रूप से "विचार - चर्चा - चिंतन" करके भविष्य के लिए कुछ निर्णय लेंगे और आगामी योजनाएं बनाएंगे।